अर्थ ओवरशूट डे 2025

चर्चा में क्यों?

इस वर्ष **24 जुलाई, 2025** को [अर्थ ओवरशूट डे](#) मनाया गया। **यह अब तक की सबसे प्रारंभिक तिथि है,** जब मानवता की **पारिस्थितिकी संसाधनों की मांग,** पृथ्वी द्वारा एक वर्ष में पुनर्जीवित किये जाने वाले संसाधनों से अधिक हो गई।

- इसका अर्थ यह है कि मनुष्य ने **सात महीनों से भी कम समय में पूरे वर्ष के संसाधनों का उपभोग** कर लिया है।

मुख्य बिंदु

अर्थ ओवरशूट डे के बारे में:

- **परिभाषा:**
  - अर्थ ओवरशूट डे उस तिथि को चिह्नित करता है, जब मानवता की **पारिस्थितिकी संसाधनों एवं सेवाओं की मांग पृथ्वी की उस वर्ष की पुनर्जीवन क्षमता से अधिक हो जाती है।**
- **प्रारंभ:**
  - अर्थ ओवरशूट डे का विचार सबसे पहले यूके थिंक टैंक **न्यू इकोनॉमिक्स फाउंडेशन** के एंड्रयू सिम्स द्वारा प्रस्तावित किया गया था। न्यू इकोनॉमिक्स फाउंडेशन ने वर्ष 2006 में **ग्लोबल फुटप्रिंट नेटवर्क** के साथ मिलकर यह अभियान शुरू किया था। वर्ष 2007 से, [वर्ल्ड वाइड फंड (WWF)](#) इस पहल में सहयोग कर रहा है।
- **आकलन:**
  - इस दिवस का आकलन [ग्लोबल फुटप्रिंट नेटवर्क](#) द्वारा **यॉर्क विश्वविद्यालय** के राष्ट्रीय फुटप्रिंट और बायोकैपेसिटी खातों के आधार पर किया जाता है।
  - वैश्विक उपभोग पैटर्न को अधिक सटीक एवं अद्यतन रूप में दर्शाने हेतु आँकड़ों को प्रतिवर्ष अद्यतन किया जाता है।
- **सूत्र:**

$$\text{Earth Overshoot Day} = \left(\frac{\text{Earth's Biocapacity}}{\text{Humanity's Ecological Footprint}}\right) \times 365$$

- जैवक्षमता (Biocapacity) बनाम पारिस्थितिकी पदचिह्न (Ecological Footprint):
  - **जैवक्षमता:** वह मात्रा जिसे पृथ्वी एक वर्ष में पुनः उत्पन्न कर सकती है, जैसे- वन, चराई भूमि, कृषि भूमि एवं मत्स्य क्षेत्र आदि।
    - यह पृथ्वी के **उत्पादक भूमि और समुद्री क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करती है,** जिसमें वन, चरागाह भूमि, कृषि भूमि तथा मत्स्य शामिल हैं।
  - **पारिस्थितिकी पदचिह्न:** इन संसाधनों पर मानवता की कुल मांग (जिसमें भोजन, लकड़ी, शहरी बुनियादी ढाँचे के लिये स्थान और **कार्बन डाइऑक्साइड** अवशोषण शामिल हैं)।
    - यह [जीवाश्म ईंधन](#) से उत्पन्न [CO_2 उत्सर्जन](#) को अवशोषित करने के लिये भोजन, फाइबर, लकड़ी और स्थान जैसे संसाधनों की जनसंख्या की मांग को मापता है।
- **वैश्विक प्रभाव**
  - **पारिस्थितिकी हानि:** जब किसी क्षेत्र की मांग उसकी पारिस्थितिकी आपूर्ति से अधिक हो जाती है, तो वहाँ **पारिस्थितिकी हानि** होती है। इस हानि को संसाधनों के आयात, स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्रों के अति-दोहन (जैसे अत्यधिक मछली पकड़ना) और वायुमंडल में CO_2 उत्सर्जन द्वारा पूरा किया जाता है।

- **वैश्विक ओवरशूट:** वैश्विक स्तर पर, **पारिस्थितिकी हानि और ओवरशूट समानार्थी** हैं, क्योंकि ग्रह पर संसाधनों का कोई शुद्ध आयात नहीं है।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/earth-overshoot-day-2025